विशिष्ट बालकों के लिए विशेष शिक्षा
(Special Education for Exceptional children)

विशेष शिक्षा की आवश्यकता
Need for Special Education.

जब बालकों में वैयक्तिक भिन्नताएँ इस सीमा तक पायी जाती है कि उन्हें विशिष्ट बालकों की श्रेणी में रखना आवश्यक हो जाता है तब ये बालक सामान्य शिक्षण पद्धतियों एवं शिक्षा व्यवस्था से लाभान्वित नहीं हो पाते है।

"एक प्रजातांत्रिक प्रणाली वाले राष्ट्र में, जहां प्रत्येक व्यक्ति की योग्यताओं एवं क्षमताओं का अधिकतम विकास मानवीय अधिकार माना जाता है, राष्ट्र समाज व अभिभावकों का यह कर्तव्य हो जाता है। विभिन्न विशिष्टताओं वाले बालकों/व्यक्तियों के लिए विशेष शिक्षा की व्यवस्था की जाये।"

"एक चक्षुहीन बालक अपने देख सकने की अक्षमता के कारण न तो सामान्य कक्षाओं में पढ़-लिख ही सकता है, और न सामान्य बालकों के साथ अन्य क्रिया कलापों में भाग ले सकता है।

एक प्रतिभाशाली बालक सामान्य कक्षाओं में कुण्ठित हो सकता है। दूसरी तरफ एक पिछड़ा बालक कक्षा में लगातार असफल

होने के कारण अन्य प्राणियों से प्रभावित हो सकता है।

विशेष शिक्षा की समस्याएँ
Problems of Special Education

विशेष शिक्षा के आदर्श एवं उद्देश्य दोनों ही सामान्य शिक्षा के आदर्शों एवं उद्देश्यों के समान ही है। अतः दोनों में केवल अन्तर इनके स्वरूप एवं विधियों में है। विशेष विशिष्ट शिक्षा (बालकों) की विशिष्ट योग्यताएं एवं अक्षमताओं के अनुरूप होती है। इसलिए विशिष्ट बालकों की शिक्षा में शिक्षण-प्रशिक्षण मार्गदर्शन की विशिष्ट विधियों एवं तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। विशेष शिक्षा की समस्यायें निम्नलिखित बातों से सम्बंधित है —

(1) विशिष्ट बालकों को समझने की समस्या (Understanding problem of Exceptional child)

किसी भी बालक को शिक्षा प्रदान करने से पहले उसके व्यक्तित्व को समझना अत्यन्त आवश्यक है यह विशिष्ट बालकों को बहुत आवश्यक है। क्योंकि विशिष्ट बालक की विशेषताएं साधारण बालकों की तुलना

25 September
Wednesday WK 39
Day 268-097
2019

में अधिक तीव्र व विचलित होती है। इन बालकों के माता-पिता व शिक्षकों को चाहिए कि वह बालक को समझाएं कि वे भी ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें सभी के समान आदर, विश्वास, स्नेह और सुरक्षा चाहिए।

(2) औपचारिक शिक्षा की समस्याएँ (Problem of Formal Education)

विशिष्ट बालकों को भी सामान्य बालकों के समान औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता होती है। उनके लिए ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि उन्हें कम से कम पढ़ने लिखने और साधारण गणित का ज्ञान हो जाए।

आधुनिक शैक्षिक तकनीकी ने ऐसी विधियों तकनीकों एवं उपकरणों का अविष्कार किया है जिनकी सहायता से विकलांग बच्चों को भी औपचारिक शिक्षा दी जा सकती है।

विशिष्ट बालकों की शिक्षा का स्तर उनके शारीरिक एवं मानसिक स्तर के अनुरूप होना चाहिए। औपचारिक शिक्षा के लिए स्कूल में अति विशिष्ट वातावरण की नहीं बल्कि विशिष्ट प्रशिक्षित शिक्षक की नितान्त आवश्यकता है।

(3) व्यावसायिक प्रशिक्षण vocational training की समस्याएँ :-

विशिष्ट बालकों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण भी आवश्यक है। लेकिन ये विशेष शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य नहीं होना चाहिए।

विकलांग बालकों को रोजगारपरक काम धन्धों में प्रशिक्षित करने की व्यवस्था होनी चाहिए। इन्हें संगीत, टाइप, राइटिंग, कताई, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, धुनाई, पाक विद्या आदि कार्यों में प्रशिक्षित करना चाहिए।

विकलांग बालकों के लिए यह एक अच्छी बात है कि वह अपनी योग्यता व क्षमता के अनुसार ऐसा कार्य सीख लें जिससे वे आत्म निर्भर बन सकें जिससे उनमें हीनता की भावना कम होगी और उनमें आत्मविश्वास एवं आत्मसुरक्षा की भावना जाग्रत होगी और उनका जीवन आनन्दमय व्यतीत होगा।

विशेष शिक्षा की व्यवस्था
Provision of Special Education

यद्यपि भिन्न प्रकार की विशिष्टताओं वाले बालकों के लिए विशिष्ट शिक्षा की व्यवस्था भी भिन्न प्रकार से की जाती है।

Appointments

(1) विशेष परिभ्रामी अध्यापकों, समाज सेवियों, विशेषज्ञों द्वारा शिक्षण एवं निर्देशन (Teaching and guidance by Special visiting Teachers, Social worker and Experts)

विशिष्ट बालकों को सामान्य कक्षाओं में ही रखकर विशेष शिक्षा की व्यवस्था विशेष परिभ्रामी अध्यापकों, समाज सेवियों विभिन्न दोषों के सुधारकों एवं विषय विशेषज्ञों की सेवाएं प्राप्त करके की जा सकती है। ऐसे व्यक्ति समय समय पर विद्यालयों में आकर अध्यापक व अभिभावकों से मिलकर विभिन्न विशिष्ट बालकों को पहचानने, उन्हें शिक्षा व निर्देशन देने में सहायक हो सकते हैं।

इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था में विशिष्ट बालक को शिक्षित करने की मुख्य जिम्मेदारी कक्षा अध्यापक की ही होती है। यह व्यवस्था उन विद्यालयों व क्षेत्रों में उपयोगी रहती है, जिनमें विशिष्ट बालकों की संख्या बहुत कम होती है या बालकों में विशिष्टता का स्तर निम्न होता है। उदाहरणार्थ - सामान्य कक्षा में शिक्षा पा रहे तोतले बालक की भाषा को भाषा सुधारक के उचित निर्देशन व अभ्यास से सुधारा जा सकता है।